दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक : 08.03.2025

प्रकाशनार्थ

दिनांक 08.03.2025 गोरखपुर। दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोरखपुर में महिला सशक्तिकरण, उत्पीड़न व निवारण समिति के तत्वावधान में युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजय नाथ एवं राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ स्मृति व्याख्यानमाला के अन्तर्गत अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर ''भारतीय संस्कृत में स्त्री एवं उसका योगदान'' विषय पर मुख्य अतिथि प्रो. विपुला दूबे, भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्ष प्रान्त अध्यक्ष ने कहा कि भारतीय मनीषा ने स्त्रियों को सदैव मातृभाव से देखा है। भारत में भाषा को भी मातृभाषा के रूप में जाना जाता है। इसी के साथ भारतीय संस्कृति में अर्धनारीश्वर की परिकल्पना में स्त्री पुरूष को एक समान अधिकार दिया गया है। वास्तव में स्त्री व पुरूष एक दूसरे के पूरक है। अमेरिका जैसे सशक्त देश में भी महिलाओं को सन 1908 तक वोट देने का अधिकार ही नही था। जबकि भारत की संस्कृति में संविधान लागू होने के साथ ही समान रूप से वोट देने का अधिकार था। उन्होंने समृद्ध भारतीय संस्कृति का उल्लेख करते हुए कहा कि राम के चरित्र निर्माण में माता कौशिल्या का विशेष योगदान है। एक स्त्री अपने पुत्र–पुत्रियों के चरित्र निर्माण हेतु सदैव लगी रहती है। दूसरी शताब्दी में महिला शासिका नांगलिका ने 17 वैदिक यज्ञों का सम्पादन किया, इसी क्रम में एक प्रजा वत्सल शासिका के रूप में अहिल्या बाई होल्कर के नाम से हम सभी परिचित हैं। पर्यावरण व प्रदूषण वर्तमान की एक बड़ी समस्या है, इस दिशा में प्रकृति के संरक्षक के रूप में महिलाएँ प्रमुख रूप से पर्यावरण व प्रकृति की पूजा के साथ समर्पित दिखती है। स्त्री किसी भी परिवार, समाज व राष्ट्र की धुरी होती है, यदि वह बिखरती है तो पूरा परिवार, समाज व राष्ट्र बिखर जायेगा।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. ओम प्रकाश सिंह ने कहा कि हमारी संस्कृति में प्रारम्भिक काल से ही नारी को मर्यादा प्रदान की गयी है। यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता.... मनुस्मृति से लिया गया यह श्लोक स्पष्ट करता है कि जहॉ स्त्रियों का सम्मान होता है वहॉ देवता निवास करते है। हमारे समाज में नारी सदैव ही त्याग और करूणा की प्रतिमूर्ति रही है। गुरू वशिष्ठ के आश्रम में ऋषि पत्नी अरूंधति शिक्षा प्रदान करती थी। सत्पथ ब्राह्मण के अनुसार जो महिलाएँ शिक्षक की भूमिका में होती थी उन्हें उपाध्याय कहा जाता था। हमारे शास्त्र कहते है कि पुत्र कुपुत्र हो सकता है लेकिन माता कुमाता नहीं। पश्चिमी दुनिया से चला नारी मुक्ति आन्दोलन इसलिए करना पड़ा क्योकि अमेरिका व यूरोप में नारी उपेक्षित थी।

कार्यक्रम का संचालन डॉ० विभा सिंह, अतिथि परिचय डॉ. प्रियंका सिंह के द्वारा किया गया एवं धन्यवाद ज्ञापन सांस्कृतिक प्रकोष्ठ की प्रभारी प्रो. अर्चना सिंह ने किया। इस अवसर पर प्रो. शशि प्रभा सिंह, डॉ. प्रतिमा सिंह, डॉ. निधि राय, डॉ. अनिता कुमारी, डॉ. सरिता सिंह, डॉ. कामिनी सिंह, डॉ. अनुपमा, डॉ. समृद्धि सिंह, डॉ. अनुराधा सिंह, डॉ. अनुपमा श्रीवास्तव, डॉ. सुनीता श्रीवास्तव सहित सभी छात्र–छात्राएं उपस्थित रहे।

(डॉ.) सुनील कुमार सिंह
सह–प्रभारी, सूचना एवं जनसम्पर्क